कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: www.cicr.org.in

अंक: 4 खंड: 1 जनवरी 25–31, 2015

के.क.अ.सं में गणतंत्रदिवस का समारोह

भारत के 66 वें गणतंत्र दिवस दि.26 जनवरी 2015 को कें.क.अ.सं, नागपुर, और उसकी क्षेत्रीय केंद्रों सिर्सा और कोयंबटूर में मनाया गया । राष्ट्रीय तिरंगा झंडा डॉ. के.आर क्रांति, निदेशक, कें.क.अ.सं द्वारा फहराया गया था । उनकी गणतंत्र दिवस भाषण में उनके मत था कि देश की प्रगति अनिवार्य रूप से काम बल पर निर्भर करता है और सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान बढ़ाना कृषि विज्ञानी की जिम्मेदारी है । उन्होंने इसरो के वैज्ञानिकों से प्रेरणा लेकर सफलता प्रौद्योगिकी 'कृषि पर मिशन' प्रदान करने से भारतीय कपास परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव लाने के संबंध में के.क.अ.सं के कर्मचारियों को सुझाव दिया । उन्होंने के.क.अ.सं के तीनों केंद्रों में किया जा रहा अच्छा काम की सराहना की एवं उन्होंने कहा कि अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कठिन प्रयास करना चाहिए । "एक संस्था के रूप में हमारा योगदान देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है" उन्होंने कहा । उन्होंने उच्च पदों पर पदोन्नत किया गया और जो हाल ही में भर्ती किए गये हैं, उन सभी कर्मचारियों को बधाई दी । खेलों डॉ. जी. बालसुब्रमणी द्वारा कर्मचारियों के लिए आयोजित की गईं । सभी कर्मचारी ने समारोह में भाग लिया । क्षेत्रीय केंद्र, सिर्सा में भी डॉ. डी. मोंगा ने राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराया । के.क.अ.सं, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर ने भी जोश सहित 66 वें गणतंत्र दिवस मनाया । डॉ. अ.हि.प्रकाश, परियोजना समन्वयक एवं अध्यक्ष ने राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराया और कर्मचारियों को संबोधित किया । उन्होंने पोंगल समारोह के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के लिए कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किया ।

वैज्ञानिक वार्ता

डॉ. के.शंकरनारायणन, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि विज्ञान) ने दि. 31.1.2015 को, "राष्ट्रीय किसान आयोग - संदर्भ और सिफारिशों" पर एक भाषण दिया । उत्पादन और कई फसलों की उत्पादकता हाल के दिनों में स्थिर कर दिया गया है जिसके परिणामस्वरूप कम कृषि विकास दर और कृषि संकट हुए हैं जो, राष्ट्रीय किसान आयोग के गठन के लिए अधिकार देता है । आयोग प्रख्यात वैज्ञानिक, दूरदर्शी और हरित क्रांति के पिता प्रोफेसर. डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन की अध्यक्षता में किया गया था । आयोग ने महिलाओं और राष्ट्र खिला पुरुषों की आर्थिक भलाई के अधिक ध्यान केंद्रित किया ।

आयोग के दस प्रमुख लक्ष्यों किसान की "न्यूनतम शुद्ध आय" सुधार करने के लिए भी शामिल है, सभी खेत नीतियों में लिंग आयाम, भूमि सुधार, किसानों के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रणाली, भूमि, जल, जैव विविधता और जलवायु संसाधनों के संरक्षण, समुदाय केंद्रित भोजन, पानी और ऊर्जा सुरक्षा व्यवस्था, युवाओं को आकर्षित करके खेती के लिए बनाए रखना और फसलों की जैव-सुरक्षा खेत जानवरों, मछली और जंगल के पेड़, को मजबूत बनाना, कृषि पाठ्यक्रम का पुनर्गठन, आदानों की आपूर्ति और उत्पादन में भारत को एक वैश्विक आउटसोर्सिंग केंद्र के रूप बनाने के उद्देश्य में है।

भूमि परिसंपत्तियों पर प्रमुख सिफारिश किरायेदारी कानूनों के सुधार, भूमि पट्टे पर देने, उच्चतम सीमा अधिशेष भूमि का वितरण, बंजर भूमि, घरों और कृषि भूमि में महिलाओं के लिए संयुक्त पट्टे जारी करने, कृषि के लिए प्रधान कृषि भूमि के संरक्षण और भूमिहीनों को भूमि उपलब्ध कराने आदि हैं । जल प्रबंधन पर आयोग की सिफारिशें और नीतिगत उपायों वर्षा जल संचयन, और रिचार्ज जलभृत, सिंचाई के तहत नए क्षेत्र के 10 लाख हेक्टेयर में लाने, जल उपयोग दक्षता में 10% वृद्धि, मौजूदा जल निकायों के नवीनीकरण, बेहतर सिंचाई पद्धतियों को अपनाने, पानी साक्षरता कार्यक्रम, पानी का संयुक्त उपयोग, उच्च मूल्य की खेती - कम पानी की आवश्यकता फसलों, और पानी पंचायत पर बल दिया । फसल पशुधन एकीकृत खेती का महत्व, गुणवत्ता चारा और चारा की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए राज्य स्तर पर पशुधन और चारा निगमों की स्थापना, राष्ट्रीय पशुधन विकास परिषद के गठन के पशुधन क्षेत्र के सभी पहलुओं को संबोधित करना, मुर्गीपालन-संगरोध और परीक्षण की स्थापना सभी बंदरगाहों पर सुविधाओं के पशु क्षेत्र में परिकल्पना की गई है । भूमिहीन श्रमिक परिवारों को गांव के तालाबों और अन्य जल निकायों के पहुँच प्रदान करने के क्रम में जलजीवालयों पर सुधार करना, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एन.एफ.टी.बी) की स्थापना-और सभी प्रशिक्षण के लिए मछली और मछुआ परिवारों को प्रशिक्षण के लिए क्षमता निर्माण केंद्रों मत्स्य पालन क्षेत्र में प्रमुख प्रस्ताव थे ।

पारंपरिक ज्ञान (टी.के.) का प्रलेखन, यथावत ऑन-फार्म कृषि संरक्षण में शामिल परिवारों के समर्थन, भागीदारी प्रजनन कार्यक्रम, जीनोम क्लब, हर्बल बायोवेलीस की स्थापना, लोगों को उनकी नस्लों के संरक्षण के लिए पुरस्कार और प्रोत्साहन के प्रेरित, और देशज ज्ञान के दस्तावेज़ को गांववाले समुदायों के लिए लिखित प्रमाण करने पर बल दिया । ऋण और बीमा क्षेत्र में प्रमुख सुधारों जरूरतमंदों को ऋण प्रणाली को पहुंचाना, फसल ऋण पर ब्याज दर में 4 फीसदी कमी करने, संकट और आपदाओं के दौरान ब्याज की छूट, एक कृषि जोखिम की स्थापना निधि, किसान महिलाओं को किसान क्रेडिट कार्ड जारी करने, एक एकीकृत क्रेडिट –सह-फसल पशुधन मानव स्वास्थ्य बीमा पैकेज को अपनाने और सभी फसलों के लिए फसल बीमा का लागू करने आदि हैं ।

खेत स्कूलों की स्थापना और व्यापक राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा योजना भी आयोग द्वारा प्रस्तावित किया गया था । विपणन के क्षेत्रों में अनुमानित सुधार 50% से अधिक न्यूनतम समर्थन मूल्य में है जब बढ़ती लागत न्यूनतम समर्थन मूल्य के साथ समकारी है। मार्केट इंटरवेंशन स्कीम (एमआईएस), सामुदायिक खाद्य अनाज बैंकों और सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से पौष्टिक बाजरा बेचते हैं । कृषि क्लीनिक की स्थापना के लिए वेंचर कैपिटल निधि का सृजन, और उत्पादन-सह-प्रसंस्करण के लिए कम ब्याज ऋण जारी करके कृषि के प्रति युवाओं को आकर्षित करने के लिए सुझाव दिया गया । हिंसक उतार चढ़ाव की अवधि के दौरान किसानों की रक्षा के लिए कीमतों में मूल्य स्थिरीकरण निधि की स्थापना, राज्य किसान आयोग की स्थापना, और खाद्य गारंटी अधिनियम का अभिनीत आयोग के अन्य महत्वपूर्ण प्रस्ताव थे।

छात्रों का दौरा

के.क.अ.सं, कोयंबत्तूर में दि. 29.1.2015 को पी.एस.जी. प्रौद्योगिकी कॉलेज के वस्त्र प्रौद्योगिकी विभाग से दस एम.टेक छात्रों ने दौरा किया । के.क.अ.सं, कोयंबत्तूर में दि. 31.1.2015 को सरकार विक्टोरिया कॉलेज, पलक्कड़ से एम.एस.सी (प्राणि विज्ञान) के बारह छात्रों, दौरा किया । डा. (श्रीमती) एस. उषा रानी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने छात्रों को संस्थान से जारी की विभिन्न किस्मों / संकर, उपज बढ़ाने के प्रौद्योगिकियों और सुरक्षा उपायों जो संस्थान द्वारा विकसित हैं, उन सभी के संबंध में व्याख्या की । छात्रों ने के.क.अ.सं के प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन प्लाट का भी दौरा किया । डा. (श्रीमती) बी. धाराजोति, प्रमुख वैज्ञानिक ने कपास में कीटों और उनके नियंत्रण के उपायों के बारे में इन छात्रों को संबोधित किया ।

जर्मप्लाज्म अन्वेषण

उत्तरी कर्नाटक के दस जिलों में अर्थात रायचूर, बीजापुर, बागलकोट, गदग, धारवाड़, उत्तरकन्नडा, हावेरी, दावणगेरे, चित्रदुर्गा और बल्लेरी में दि. 21.1.2015 से 27.1.2015 तक परियोजना "**बारहमासी का अन्वेषण, संग्रह और संरक्षण एवं भारत के विभिन्न क्षेत्रों में देसी कपास की भूमि की जाती**" के दौरान डॉ. एम.शरवणन और डॉ. एच.बी संतोष द्वारा कपास की भूमि की जाती एवं बारहमासी के संग्रह के उद्देश्य के साथ एक व्यापक जर्मप्लाज्म अन्वेषण आयोजित किया । इस अन्वेषण के दौरान उत्तरी कर्नाटक के विभिन्न स्थानों से कुल सोलह बारहमासी में से दस जी.अर्बोरियम संबंधित एवं छह जी.बार्बाडेन्स से संबंधित एकत्र किए गए थे । इन संग्रहों में मूल्यांकन किया जाएगा और विशिष्ट वालों को कपास सुधार कार्यक्रमों में उपयोग हेतु 'बारहमासी गार्डन' में स्थापित किया जाएगा एवं भविष्य में उपयोग के लिए जर्मप्लाज्म बैंक में संरक्षित किया जाएगा।

जर्मप्लाज्म अन्वेषण का मार्ग नक्शा

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक: डॉ. नंदिनी गोक्टे-नार्खडेकर
संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश
निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुश्वाहा

प्रमाण: कपास नई खोज अंक-4, खंड-1, 2015, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com